ज्ञान क्रिया स्वभावं तं शिवं शान्तं निरञ्जनम्।
सर्वकारण भूतं तं वन्देऽहं परमेश्वरम्।।

ज्ञान स्वरूप, शान्त, निष्कलंक और समस्त सृष्टि के मूल

अघोर, घोर और अति घोर भगवान शिव

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

आप सब अनेकों तीर्थ स्थानों की यात्रा करते है, पर्वतों में स्थित शक्तिपीठों में जाते है और वहां प्रणाम कर, पूजा कर वापिस आ जाते है। वहां पर आपने देखा होगा कि दुर्गम से दुर्गम स्थानों पर भी जटाजूट बढ़ाये एकाध वस्त्र या लंगोट धारण किये व्यक्ति साधना कर रहे होते है। कौन है ये व्यक्ति जो संसार की भीड़-भाड़ से दूर अपना जीवन शिव साधना और शक्ति साधना में लगा देते है।

आपके मन में यह प्रश्न आ रहा होगा कि क्या संसार को त्याग कर ही साधना की जा सकती है या संसार में रहकर भी शिव और शक्ति की साधना की जा सकती है। परम आराध्य तो जगत को चेतना देने वाले और चेतना का विस्तार करने वाले शिव और शक्ति ही है जो अदृश्यमान है।

आपने जो शिव का स्वरूप बनाया है वह आपकी कल्पना का मूर्तरूप है वास्तव में **शिव और शक्ति चेतना का स्वरूप है और चेतना सदैव अदृश्य होकर मनुष्य की तन की शक्ति से क्रिया करती है इसीलिये तंत्र का अर्थ है - चेतना का विस्तार करने वाली प्रणाली।**

तंत्र का उद्देश्य है - मनुष्य की सुप्त शक्तियों का जागरण, प्रकृति और पुरुष का समन्वय और अपने स्वयं में शिव स्वरूप की अनुभूति करना।

हर व्यक्ति को अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने का अधिकार होता है। इसी प्रकार तंत्र साधना में अनेक शाखाएं विकसित हुई, जिन्हें व्यवहारिक रूप में ऋषियों-योगियों ने सिद्ध किया। आश्रम में भी साधना होती थी, विद्या अध्ययन भी होता था। पुस्तकीय ज्ञान के साथ अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान भी दिया जाता था। जीवन मार्ग और अर्थशास्त्र का भी अध्ययन कराया जाता था। जिससे व्यक्ति श्रेष्ठ गृहस्थ बनकर समाज का सर्वांगीण श्रेष्ठ विकास कर सके।

इसी में कुछ व्यक्तियों के मन में प्रश्न आया कि जब जीवन का अन्तिम लक्ष्य शिव से मिलन ही है तो क्यों गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया जाये। अपना जीवन शिव को ही क्यों नहीं समर्पित कर दिया जाये और अपनी जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ा जाये। जिससे यह जीवन सार्थक हो सके।

इसी कारण तंत्र की दो विधियों का विकास हुआ।

1. दक्षिणाचार **2. वामाचार (अघोर पंथ)**

दोनों तंत्र मार्गों का लक्ष्य एक ही है - शिवत्व की प्राप्ति। पर दोनों की साधना पद्धति, मनोविज्ञान और अनुशासन में अन्तर है।

गृहस्थ जीवन में केन्द्र बिन्दू होता है - घर-परिवार, संतति, समाज, सम्मान इत्यादि।

अघोर जीवन में केन्द्र बिन्दू होता है शिव और शक्ति से मिलन, तन को कितना ही तपाना पड़े तपाया जाये। वहां तन एक छोटा सा साधन है। मूल लक्ष्य है - शिवत्व की प्राप्ति।

दक्षिणाचार का अर्थ है - धर्म, संयम के साथ तंत्र साधना और अधिकांश समाज को यह मार्ग स्वीकार्य होता है इसीलिये गृहस्थ और संन्यासी इसी मार्ग का अनुसरण करते है और इसमें शुद्धता का विशेष स्थान है। शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि, स्थान की शुद्धि, आहार की शुद्धि, विचारों की शुद्धि।

इसी में मंत्र साधना भी महत्वपूर्ण साधना है। जिनके बीज मंत्र - **श्रीं, ह्रीं, क्लीं, ऐं, गं इत्यादि है। मंत्र का उद्देश्य चेतना को जाग्रत करना है।**

इसी के साथ यंत्र भी आवश्यक है। उस यंत्र को स्थापित कर यंत्र में देव शक्ति का आह्वान किया जाता है। यंत्र देव शक्ति का स्वरूप होता है। इस मार्ग में ध्यान और हवन आवश्यक है।

अब अघोर पंथ की चर्चा करते है जिसे वामाचार कहा जाता है। वास्तव में वाम का अर्थ है - सुन्दर, विशिष्ट। यह दक्षिणाचार से बिल्कुल उल्टा मार्ग नहीं हैं

वामाचार अघोर पंथ के भाग है, जिन्हें आप पंचमकार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन कहते है। वास्तविक उद्देश्य है - 1. भय समाप्त करना, 2. वासना अर्थात् लालसा पर विजय, 3. मृत्यु पर अतिक्रमण, 4. अहंकार का विनाश, 5. द्वैत से अद्वैत की यात्रा।

सामान्य मनुष्य को सबसे अधिक डर लगता है- 1. मृत्यु, 2. श्मशान, 3. अंधकार, 4. वासना, 5 सामाजिक भय।

इसी से उसके जीवन में निरन्तर बंधन बढ़ते जाते है और अघोर पंथ, वामाचार इन बंधनों को तोड़ने का मार्ग माना गया है। दक्षिणाचार हो या वामाचार, दोनों में ही गुरु के बिना कोई साधना सम्पन्न नहीं होती। इसीलिये दक्षिणाचार व्यक्ति हो या अघोर पंथ हो वह पहले गुरु को धारण करता है और गुरु से आज्ञा लेकर अपनी साधना प्रवृत हो जाता है।

सामान्य व्यक्ति जीवन में दक्षिणाचार को चुनता है क्योंकि वह सरल लगता है लेकिन वामाचार अघोर पंथ दक्षिणाचार से बहुत उच्च पंथ है क्योंकि वहां शरीर नहीं चेतना जीवन का आधार है। अब प्रश्न उठता है कि क्या सामान्य गृहस्थ व्यक्ति अघोर पंथ की साधना कर सकता है? वास्तव में प्रत्येक मनुष्य के मन में दक्षिणाचार और वामाचार दोनों विद्यमान रहते है। जब व्यक्ति भौतिक संसार के साथ-साथ अपने जीवन को उच्चतम शिखर पर ले जाना चाहते है तो वह अघोर पंथ का अनुसरण करता है। इसके लिये आवश्यक नहीं है कि हर बार श्मशान में ही जाया जाये, घर-परिवार को छोड़ा जाये। जटा-जूट बढ़ाये जाये, नग्न रहा जाये।

जब मन की धारा को हम अघोर तत्व से जोड़ते है तो अपने भीतर शिवत्व का बीज आरोपित करते है और वह मन में स्थापित बीज विकसित होकर बिल्व पत्र के वृक्ष के समान बन जाता है। जिसके पत्ते-पत्ते त्रिदल रूप में शिव को अर्पित किये जाते है अर्थात् शिव के साथ एकाकार हुआ जाता है।

अघोर साधना का आधार गुरु में श्रद्धा, शिव के प्रति समर्पण, मंत्र-जप, ध्यान, यंत्र, सेवा, वैराग्य भाव और आत्मनुशासन है।

अघोर तंत्र की सरलता उसके बाहरी स्वरूप में नहीं, बल्कि उसके मूल दर्शन में निहित है। यह साधक को बताता है कि परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बाहरी जटिलता से नहीं, बल्कि आन्तरिक पवित्रता, गुरु-भक्ति, शिव-समर्पण, करुणा और समभाव से प्रशस्त होता है। अघोर परम्परा के अनुसार जब साधक का मन निर्मल, स्थिर और अहंकार से मुक्त हो जाता है, तब उसकी चेतना में शिवतत्त्व का सूक्ष्म स्पन्दन प्रकट होने लगता है। यही स्पन्दन साधक को आत्मबोध, शान्ति, निर्भयता और परम कल्याण की दिशा में अग्रसर करता है। अतः अघोर तंत्र का वास्तविक उद्देश्य भय उत्पन्न करना नहीं, बल्कि भय का अंत करना, अज्ञान का नाश करना और प्रत्येक जीव में शिव के दिव्य स्वरूप का अनुभव कराना है।

अघोर हैं भगवान शिव। भगवान शिव को अघोरेश्वर कहा गया है, जो अपने प्रलयंकारी रूप में दसों दिशाओं को आन्दोलित कर सकते हैं, जो अपने नृत्य द्वारा सृष्टि में उथल-पुथल ला सकते हैं। **अघोर तंत्र** को तो वही समझ सकता है, जो पूर्ण शिव भक्त हो, जिसने अपने जीवन में तंत्र को पूर्ण रूप से समझने का निश्चय ठान रखा हो। अघोरियों का भी एक विशुद्ध मत रहता है अतः उन्होंने अपना एक अलग ही सम्प्रदाय बना रखा है। ऐसे सम्प्रदाय को अघोर सम्प्रदाय कहते हैं। **इस सम्प्रदाय द्वारा प्रदत्त अघोर साधनाओं का विशेष महत्त्व है, जिसके माध्यम से समस्त इन्द्रियों को वशीभूत कर कुण्डलिनी जागरण के द्वारा शिवत्वमय हुआ जाता है। भगवान शंकर इस पद्धति के प्रथम आचार्य हैं, जनक हैं।**

यह स्वाभाविक है, कि इन्द्रिय निग्रह के बाद चेतना का विकास स्वतः होने लगता है। प्राणवायु के द्वारा मूलाधार में प्रसुप्त कुण्डलिनी स्वतः ही जाग्रत होकर विभिन्न चक्रों का भेदन करती हुई सहस्रार में पहुंच जाती है। यही अघोर सम्प्रदाय में जीव को शिवमय बनाने की उदात्त प्रक्रिया कही जाती है। प्रत्येक गृहस्थ को अघोर साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये, जिससे मेरुदण्ड में स्थित चेतना का आधार इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना में एकात्म स्थापित हो सके।